

ひとりを捜す神—ルカによる福音書— 3

(15章25節～24章53節)

広田叔弘 (日本基督教団 梅ヶ丘教会牧師)

(2006年10月～2007年9月放送)

— Disc1 —

- | | |
|----------------------|--------------|
| 105. 放蕩息子のたとえ(2) 父の心 | (ルカ15：25～32) |
| 106. ところの中に何がありますか | (16：1～13) |
| 107. 福音と律法 | (16：14～18) |
| 108. 聖書の言葉を受け入れて | (16：19～31) |
| 109. 主イエスに育てられ | (17：1～10) |
| 110. コツコツとした歩み | (17：1～10) |
| 111. 救いの始まり | (17：11～19) |
| 112. 神の国はどこにある | (17：20～37) |
| 113. 気を落とすことなく | (18：1～8) |
| 114. 義とされた人 | (18：9～14) |
| 115. 神の愛に留まる | (18：15～17) |
| 116. とらわれから手を放し | (18：18～30) |
| 117. 先立つメシア | (18：31～34) |
| 118. 救いの叫び | (18：35～43) |
| 119. 救いの訪れ | (19：1～10) |
| 120. 託された宝 | (19：11～27) |
| 121. 平和の主 | (19：28～36) |
| 122. 平和への道 | (19：37～44) |
| 123. 御言葉と祈りの家 | (19：45～48) |
| 124. 固い心 | (20：1～8) |
| 125. 隅の親石 | (20：9～19) |
| 126. わたしは誰のもの | (20：20～26) |
| 127. 神によって生きている | (20：27～40) |
| 128. 誰を信じますか | (20：41～44) |
| 129. 大切なものは何 | (20：45～47) |
| 130. 軽やかな人生 | (21：1～4) |

— Disc2 —

- | | |
|----------------------|---------------|
| 131. 忍耐によって勝利を勝ち取る | (21：5～19) |
| 132. 救いへ向かう始まり | (21：20～24) |
| 133. 頭を上げなさい | (21：25～28) |
| 134. わたしの言葉は滅びない | (21：29～33) |
| 135. 目を覚ましていなさい | (21：34～38) |
| 136. 過越の準備 | (22：1～13) |
| 137. 救いの食卓 | (22：14～23) |
| 138. 仕える者 | (22：24～30) |
| 139. あなたのために祈った | (22：31～34) |
| 140. 旅の備え | (22：35～38) |
| 141. 眠りから立ち上がって祈れ | (22：39～46) |
| 142. 闇を越えて | (22：47～53) |
| 143. ベト口の呑み | (22：54～62) |
| 144. 三つの法廷(1) 最高法院 | (22：63～71) |
| 145. 三つの法廷(2) ピラトの尋問 | (23：1～5) |
| 146. 三つの法廷(3) ヘロデの尋問 | (23：6～12) |
| 147. 人々の大声 | (23：13～25) |
| 148. 十字架への道 | (23：26～31) |
| 149. 執り成し | (23：32～38) |
| 150. 救いの今 | (23：39～43) |
| 151. イエスの死 | (23：44～49) |
| 152. 静かな埋葬 | (23：50～56) |
| 153. 神の言葉を思い出せ | (23：56～24：12) |
| 154. 新しい旅の始まり | (24：13～35) |
| 155. 復活の救い | (24：36～49) |
| 156. 天への道 | (24：50～53) |